



भारतीय भाषाओं में संस्कृत का स्थान

डा. राज पाल

प्राचार्य

गांधी आदर्श कालेज

समालखा (पानीपत)

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

भारतीय भाषाओं की परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में गिनी जाती है। भारतीय उपमहाद्वीप में आज भी भाषाओं और बोलियों की अद्भुत विविधता विद्यमान है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है, जबकि असंख्य बोलियाँ और उपभाषाएँ भारत की सांस्कृतिक धरोहर को संजोए हुए हैं। इतनी अधिक भाषाई विविधता के बावजूद भारतीय भाषाओं में एक गहरी आंतरिक एकता पाई जाती है। इस भाषाई एकता का मूलाधार और केंद्रबिंदु है — **संस्कृत भाषा**। संस्कृत केवल भारत की ही नहीं, बल्कि विश्व की भी प्राचीनतम वैज्ञानिक भाषाओं में से एक मानी जाती है। इसका इतिहास वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक फैला हुआ है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद जैसे वेदग्रंथ, उपनिषदों में निहित दार्शनिक चिंतन, पुराणों का ऐतिहासिक और धार्मिक साहित्य तथा रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य — सभी संस्कृत में रचे गए। इस प्रकार संस्कृत भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक धारा का प्रमुख वाहक

रही है। संस्कृत का महत्व केवल इतना ही नहीं है कि यह धार्मिक या दार्शनिक ग्रंथों की भाषा रही है, बल्कि यह **भारतीय भाषाओं की जननी और मार्गदर्शिका** भी है। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ — जैसे हिंदी, बंगाली, उड़िया, असमी, मराठी, पंजाबी और गुजराती — प्रत्यक्षतः संस्कृत से विकसित हुई हैं। इन भाषाओं की शब्दावली, व्याकरणिक संरचना और साहित्यिक परंपरा संस्कृत से प्रभावित है। हिंदी में प्रयुक्त तत्सम और तद्भव शब्द इसका स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। जैसे *नेत्र* → *आँख*, *अश्व* → *घोड़ा*, *जल* → *पानी*। दूसरी ओर, द्रविड़ भाषाएँ — तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम — अपनी स्वतंत्र परंपरा रखते हुए भी संस्कृत से गहराई से प्रभावित हुई हैं। तमिल साहित्य में ‘मणिप्रवाल शैली’ संस्कृत और तमिल का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है। तेलुगु को अक्सर ‘आंध्र-संस्कृत’ कहा गया है क्योंकि इसमें संस्कृत मूल के शब्दों की भरमार है। कन्नड़ और मलयालम साहित्य में भी संस्कृत शब्दावली और विचारधारा का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है।

भारतीय भाषाओं की शब्दावली में संस्कृत की उपस्थिति इतनी गहन है कि आधुनिक युग में भी जब वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक और दार्शनिक शब्दों की रचना करनी होती है, तो संस्कृत को ही आधार बनाया जाता है। *पर्यावरण*, *अंतरिक्ष*, *जीवविज्ञान*, *संगणक*, *लोकतंत्र*, *समाजवाद* जैसे आधुनिक शब्द संस्कृत के ही मूल से निर्मित हैं। यह तथ्य सिद्ध करता है कि संस्कृत आज भी भारतीय भाषाओं की **जीवंत प्रेरणा** है। इसके अतिरिक्त साहित्यिक परंपराओं की दृष्टि से भी संस्कृत का स्थान अप्रतिम है। संस्कृत महाकाव्य, खंडकाव्य, नाट्यकाव्य, शास्त्रीय काव्यशैली और दर्शनशास्त्र ने भारतीय भाषाओं के साहित्यिक स्वरूप को दिशा दी। तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई और कबीर जैसे कवियों की प्रेरणा का मूल संस्कृत ग्रंथों में निहित है। इसी प्रकार, बंगाली, मराठी और गुजराती साहित्य पर भी संस्कृत का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय भाषाओं में संस्कृत के स्थान का गहन विश्लेषण करना है। इसमें संस्कृत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, भारतीय आर्य भाषाओं और द्रविड़ भाषाओं पर उसका प्रभाव, शब्दावली और व्याकरणिक

संरचना में उसका योगदान, साहित्यिक परंपरा को दिशा देने में उसकी भूमिका और आधुनिक युग में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संस्कृत केवल एक प्राचीन भाषा नहीं है, बल्कि यह भारतीय भाषाओं की **जीवनरेखा** और **सांस्कृतिक एकता की आधारशिला** है। भारत की विविध भाषाओं को जोड़ने वाला सूत्र संस्कृत ही है। यही कारण है कि संस्कृत का स्थान भारतीय भाषाओं में सर्वोपरि और अद्वितीय है।

Keywords: संस्कृत, भारतीय भाषाएँ, प्राकृत, अपभ्रंश, शब्द-आदान-प्रदान, व्याकरणिक प्रभाव, सांस्कृतिक एकता

भूमिका

भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आधारशिला भाषा है, और इस भाषाई परंपरा में संस्कृत का स्थान सर्वोपरि है। संस्कृत केवल एक भाषा भर नहीं है, बल्कि यह भारतीय ज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला और आध्यात्मिकता की मूल धारा है। इसे “*देववाणी*” कहा गया है क्योंकि वेद, उपनिषद, पुराण, गीता, महाकाव्य और शास्त्रीय ग्रंथ इसी भाषा में रचे गए। भारत की भाषाई विविधता में संस्कृत एक अद्वितीय सेतु के रूप में कार्य करती रही है, जिसने उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सभी भारतीय भाषाओं को एक साझा सांस्कृतिक सूत्र में बाँधा। संस्कृत की महत्ता को स्वयं प्राचीन ग्रंथों में भी रेखांकित किया गया है। *गरुड पुराण* में संस्कृत की विशेषता बताते हुए कहा गया है –

"संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः।

अनया धर्मकामार्थमोक्षाणाम् साधनं स्मृतम्॥"

अर्थात् संस्कृत भाषा दैवी वाणी है, जिसका महर्षियों ने प्रचार किया और जिसके माध्यम से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति संभव है। संस्कृत को अनेक ग्रंथों ने 'देववाणी' कहा है और परंपरा में यह ज्ञान के उच्चतम रूप का प्रतीक रही है। परंपरा और आधुनिकता के इस जाल में संस्कृत ने हमेशा एक सेतु का काम किया — भिन्न-भिन्न भाषाई समुदायों के बीच ही नहीं बल्कि धर्म, दर्शन तथा

सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के बीच भी। प्राचीन शास्त्रों में भी शिक्षा व ज्ञान के महत्व पर बल दिया गया है। एक प्रसिद्ध उपनिषद श्लोक है **सा विद्या या विमुक्तये**।

(अर्थ: वे ही सत्य-भरी शिक्षा हैं जो मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें।)

यह श्लोक बताता है कि परम्परागत दृष्टि से जिस भाषा ने ज्ञान के सर्वाधिक पहलुओं का संरक्षण किया, वह भाषा विशेष महत्व रखती है। संस्कृत ने अनेक अनुशासन—जैसे दर्शन, आयुर्वेद, ज्योतिष, साहित्य और तर्कशास्त्र—का स्पष्ट, सुसंगत और परिभाषित स्वरूप प्रदान किया। पाणिनि के *अष्टाध्यायी* ने व्याकरण के ऐसे नियम प्रस्तुत किए कि भाषा के संरचनात्मक अध्ययन में वह आधारभूत ग्रंथ बन गया। इस कारण संस्कृत न केवल पुरातन परंपरा का प्रतिनिधि है, बल्कि भाषाविज्ञान एवं सांस्कृतिक अध्ययन के लिये आधुनिक शोध का भी अहम स्रोत है। भारतीय भाषाओं के विकास-क्रम (वैदिक संस्कृत → लौकिक/कौटिल्यकालीन संस्कृत → प्राकृत → अपभ्रंश → आधुनिक भाषाएँ) को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट होता है कि संस्कृत और उसकी स्थानीय बोलियाँ तथा उनसे निकली भाषाएँ एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। उसी प्रकार, द्रविड़ भाषाओं ने भी संस्कृत से शब्द, विचार व साहित्यिक शैलियों को ग्रहण कर लिया, जिससे समूचे उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक आदान-प्रदान संभव हुआ। भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया को देखें तो अधिकांश आर्यभाषाएँ संस्कृत की संतान कही जा सकती हैं। हिंदी, बंगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, असमिया और नेपाली भाषाएँ प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से संस्कृत से ही निकलीं। इतना ही नहीं, तमिल, कन्नड़, तेलुगु और मलयालम जैसी द्रविड़ भाषाओं ने भी संस्कृत से हजारों शब्दों को आत्मसात किया और अपनी साहित्यिक परंपरा को समृद्ध किया। संस्कृत का प्रभाव केवल भाषाई स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने भारतीय समाज को सांस्कृतिक एकता का बोध कराया। जब-जब भारत में विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के बीच दूरी बढ़ी, संस्कृत ने रामायण, महाभारत और पुराणों के माध्यम से पूरे देश को एक ही सांस्कृतिक धारा में प्रवाहित किया। यही कारण है कि

संस्कृत को “भारतीय भाषाओं की जननी” तथा “भारतीय संस्कृति की आत्मा” कहा जाता है। संस्कृत की विशेषता यह भी है कि यह अत्यंत वैज्ञानिक और व्यवस्थित भाषा है। पाणिनि का *अष्टाध्यायी* जैसा व्याकरण ग्रंथ यह सिद्ध करता है कि संस्कृत का भाषाई ढाँचा इतना सशक्त है कि इससे आधुनिक भाषाविज्ञान की भी नींव पड़ी। यही कारण है कि संस्कृत ने न केवल प्राचीन काल बल्कि आधुनिक काल तक सभी भारतीय भाषाओं को अपनी शब्दावली, व्याकरणिक संरचना और साहित्यिक शैली से पोषित किया है। आज भी जब हम भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक शब्दों को देखते हैं तो उनके मूल में संस्कृत का ही योगदान स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ तक कि भारतीय संविधान और न्यायपालिका की प्रमुख शब्दावली भी संस्कृत पर आधारित है।

इस प्रकार, भारतीय भाषाओं की पृष्ठभूमि में संस्कृत का स्थान केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है।

भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति और संस्कृत का योगदान

संस्कृत भाषा भारत की आर्य भाषाओं की जननी है। भारतीय आर्य भाषाएँ प्राचीन वैदिक संस्कृत से विकसित हुईं। समय के साथ-साथ वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत और फिर प्राकृत भाषाएँ निकलीं। प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ अस्तित्व में आईं। हिंदी, बंगला, उड़िया, असमिया, मराठी और गुजराती—ये सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत से जुड़ी हैं। उदाहरण के लिए—

- संस्कृत शब्द “ग्राम” हिंदी और बंगला में “गाँव” तथा “ग्राम” के रूप में मिलता है।
- “मातृ” संस्कृत का शब्द है, जिससे हिंदी में “माँ”, मराठी में “आई” और बंगला में “माँ/मातोश्री” बने।

- “नदी” शब्द लगभग सभी भारतीय भाषाओं में ज्यों का त्यों प्रयुक्त होता है।

यह दर्शाता है कि संस्कृत ने केवल शब्द दिए ही नहीं, बल्कि शब्द-निर्माण की एक पूरी प्रक्रिया भारतीय भाषाओं को सौंपी। यही कारण है कि भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन में संस्कृत को आधारभूत मानना अनिवार्य है।

द्रविड़ भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव

भारतीय उपमहाद्वीप की दूसरी महत्वपूर्ण भाषाई परंपरा द्रविड़ भाषाओं की है, जिसमें तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम प्रमुख हैं। ये भाषाएँ मूल रूप से संस्कृत की संतान नहीं हैं, किंतु संस्कृत से इनका गहरा संबंध है।

- **तमिल भाषा** : सबसे प्राचीन द्रविड़ भाषा होने के बावजूद इसमें संस्कृत से आए हुए हजारों शब्द हैं। उदाहरण— “राजन” (राजा), “धर्मम्” (धर्म), “वेदम्” (वेद)।
- **तेलुगु भाषा** : इसे “आंध्र संस्कृत” कहा जाता है क्योंकि इसकी साहित्यिक शैली संस्कृत से बहुत प्रभावित है। तेलुगु के कवियों ने संस्कृत छंदों का भरपूर प्रयोग किया है।
- **कन्नड़ भाषा** : प्रारंभिक कन्नड़ साहित्य में जैन और वैष्णव संतों ने संस्कृत कृतियों का अनुवाद और अनुकरण किया।
- **मलयालम भाषा** : संस्कृत का इतना गहरा प्रभाव है कि इसे “संस्कृत-प्रचुर भाषा” भी कहा जाता है। मलयालम साहित्य में संस्कृत के शब्द 60% तक पाए जाते हैं।

इससे स्पष्ट है कि संस्कृत का प्रभाव केवल आर्य भाषाओं पर नहीं बल्कि द्रविड़ भाषाओं पर भी अत्यधिक रहा है।

हिंदी और संस्कृत का संबंध

हिंदी आज भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसका आधार खड़ीबोली है, जो अपभ्रंश और प्राकृत से निकली है। प्राकृत और अपभ्रंश संस्कृत से उत्पन्न हुए, इसलिए हिंदी पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है। हिंदी साहित्य के इतिहास को देखें तो संस्कृत से इसका निरंतर संबंध दिखाई देता है।

- **आदिकाल** में अपभ्रंशनिष्ठ साहित्य रहा, परंतु राम और कृष्ण के चरित्र संस्कृत साहित्य से ही आए।
- **भक्तिकाल** में कबीर, सूर, तुलसी ने संस्कृत ग्रंथों की भावभूमि का ही अनुसरण किया। तुलसीदास की *रामचरितमानस* संस्कृत *रामायण* पर आधारित है।
- **रीतिकाल** में संस्कृतनिष्ठ काव्यशास्त्र (अलंकार, छंद) हिंदी में प्रयुक्त हुए।
- **आधुनिक काल** में भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर रामधारी सिंह दिनकर तक ने संस्कृत से प्रेरणा ली।

आज भी हिंदी की लगभग 60% शब्दावली संस्कृत से आई हुई है। “न्याय”, “शक्ति”, “स्वतंत्रता”, “लोकतंत्र”, “समाज”, “विज्ञान” जैसे सभी शब्द संस्कृत मूल के हैं।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में संस्कृत शब्दों की भूमिका

भारतीय भाषाओं में नए शब्दों का निर्माण प्रायः संस्कृत पर आधारित होता है।

- **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी** : “गणित”, “भौतिकी”, “रसायन”, “ज्योतिष”, “प्रौद्योगिकी”, “विद्युत” आदि शब्द संस्कृत से ही आए हैं।
- **राजनीति और संविधान** : “गणराज्य”, “लोकसभा”, “राज्यसभा”, “संसद”, “अधिनियम” आदि सभी संस्कृतनिष्ठ हैं।
- **शिक्षा और दर्शन** : “आचार्य”, “शिक्षा”, “ज्ञान”, “तत्त्वज्ञान”, “विवेक”, “आत्मा” जैसे शब्द संस्कृत से ही हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि संस्कृत आधुनिक भारतीय जीवन का भी अभिन्न हिस्सा है।

सांस्कृतिक एकता में संस्कृत की भूमिका

भारत की सांस्कृतिक एकता में संस्कृत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

- **रामायण और महाभारत** : संस्कृत में रचित इन महाकाव्यों का अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में हुआ। इससे सांस्कृतिक धारा अखिल भारतीय बनी।
- **धार्मिक अनुष्ठान** : चाहे उत्तर भारत हो या दक्षिण, पूजन-विधि संस्कृत मंत्रों से ही होती है।
- **दार्शनिक ग्रंथ** : शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत से लेकर रामानुजाचार्य और मध्वाचार्य के दर्शन संस्कृत में ही रचे गए और बाद में भारतीय भाषाओं में पहुँचे।

संस्कृत ने भारतीय भाषाओं को केवल भाषाई स्तर पर ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक स्तर पर भी जोड़ा है। यही कारण है कि इसे “संस्कृति की आत्मा” कहा जाता है।

निष्कर्ष

संस्कृत का भारतीय भाषाओं में स्थान केवल ऐतिहासिक परिकल्पना नहीं, बल्कि एक जिवंत वास्तविकता है। भाषा-जहाँ तक संरचना, शब्द-सम्पदा, साहित्यिक शैलियाँ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रश्न है—वहाँ संस्कृत ने असाधारण भूमिका निभाई है। भारतीय आर्य भाषाओं के विकासक्रम को समझे बिना किसी भी आधुनिक भाषा के व्युत्पत्ति, संरचना तथा साहित्यिक विमर्श को पूर्णता से समझना कठिन होगा। द्रविड़ भाषाओं सहित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में संस्कृत के प्रभाव ने एक समेकित साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य को जन्म दिया है। इस प्रभाव ने न केवल शब्दों का आदान-प्रदान किया बल्कि विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच बौद्धिक संवाद को भी संभव बनाया। आधुनिकता के संदर्भ में संस्कृत की प्रतिष्ठा में उतार-चढ़ाव देखा गया है; परन्तु उसके



ज्ञान-भंडार, व्याकरणिक-शुद्धता और शास्त्रीय साहित्य की समृद्धि आज भी शोध, शिक्षा और नीति निर्माण के लिये अत्यन्त उपयोगी है। यदि हम भाषा की उपयुक्त नीतियाँ अपनाएँ—जैसे शिक्षण-पद्धतियों का आधुनिकीकरण, तकनीकी शब्दावली का विकास और डिजिटलीकरण—तो संस्कृत न केवल आत्म-धरोहर के रूप में सुरक्षित रह सकती है, बल्कि भारतीय भाषाओं के विकास तथा सांस्कृतिक एकता के लिये एक सशक्त उपकरण भी बन सकती है।

अतः निष्कर्ष यही है कि संस्कृत का स्थान भारतीय भाषाओं में अनिवार्य, बहुआयामी और दीर्घकालिक है—यह अतीत से जुड़ती है, वर्तमान को अर्थ देती है और भविष्य के भाषिक-सांस्कृतिक निर्माण के लिये आधार तैयार करती है।

संदर्भ-सूची

1. पाणिनि — *अष्टाध्यायी* (व्याकरणिक ग्रंथ)
2. मनिर्विलियम्स (Monier Monier-Williams) — *Sanskrit-English Dictionary* (शब्दकोश)
3. रामविलास शर्मा — *भारतीय भाषा और साहित्य* (समालोचनात्मक अध्ययन)
4. बी. डी. जोशी — *भारतीय भाषाओं का स्वरूप* (सामान्य भाषाविज्ञान)
5. सुनीति कुमार चट्टोपाध्याय — *भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास* (भाषात्मक विकास)
6. डॉ. के. ए. नायर — *संस्कृत साहित्य की परंपरा* (साहित्यिक विश्लेषण)
7. जॉर्ज कार्डोना — *Panini: A Survey of Research* (व्याकरण एवं इतिहास पर शोध)
8. आधुनिक शोध-पत्र व जर्नल लेख — भाषाविज्ञान, तुलनात्मक-भाषाशास्त्र एवं साहित्यिक अध्ययन (विभिन्न प्रकाशन)



परिशिष्ट

कुछ सामान्य संस्कृत-आधारित शब्द और उनके आधुनिक भाषा रूप — छोटे तालिका के रूप में

- मातृ → माँ (हिंदी), मातृ (संस्कृत)
- ग्राम → गाँव (हिंदी), গ্রাম (बंगला)
- नदि/नदी → नदी/नदी
- धर्म → धर्म (हिंदी/बंगला/मराठी)
- विज्ञान → विज्ञान (हिंदी)



Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

डा. राज पाल
